प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

सच्चा प्यार ही घर में सुरक्षा की वास्तविक भावना ला सकता है ...
- बिली ग्राहम

ईसाई मत प्रचारक

कभी निजी क्षेत्र की सिरमौर विमानन कंपनी रही जेट एयरवेज की मौजूदा बदहाली चिंताजनक है, लेकिन पूरे विमानन क्षेत्र की दुर्दशा ज्यादा गंभीर है और इससे हवाई यात्रा के प्रति हाल के वर्षों में पैदा हुआ जबर्दस्त उत्साह खत्म हो सकता है।

विमानन क्षेत्र का हाल

यह दुर्योग ही है कि कभी देश में निजी क्षेत्र की सिरमौर विमानन कंपनी रही जेट एयरवेज का संकट उस वक्त गाढ़ा हुआ है, जब कमजोर रुपया और महंगे ईंधन तथा निजी कंपनियों द्वारा सस्ती विमान सेवा शुरू करने के कारण देश का पूरा विमानन क्षेत्र ही हिचकोले खा रहा है। हाल के दिनों में विमानन क्षेत्र का संकट दो और वजहों से गहरा गया। एक तो पाकिस्तानी वायुक्षेत्र में उड़ान पर रोक लगने से उड़ानों पर असर पड़ा है, क्योंकि विमानों को अब ठहराव लेना पड़ रहा है। इसके अलावा बोइंग 737 मैक्स एयरक्राफ्ट की उड़ानों पर प्रतिबंध लगने का असर भी जेट और स्पाइसजेट जैसी कंपनियों पर पड़ा है। इन्हीं सब वजहों से पिछले काफी समय से आर्थिक दबाव झेल रही जेट एयरवेज ने सात अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर फेरों की संख्या घटाने के अलावा आगामी अप्रैल के अंत तक तेरह अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर उड़ान स्थगित करने की घोषणा भी की है, जो उसके घनीभूत संकट के बारे में ही बताती है। दरअसल जेट की परेशानी तो एयर सहारा का अधिग्रहण करने के साथ ही शुरू हो गई थी। बाद में लागत बढ़ने और सस्ती विमान सेवाओं के शुरू होने पर इस पर खुद को टिकाए रखने की चुनौती थी, क्योंकि इसने प्रारंभ से ही अपनी सेवाओं का स्तर अंतरराष्ट्रीय विमानन कंपनियों जैसा बना रखा था। धीरे-धीरे विमानन क्षेत्र में जेट की हिस्सेदारी कम होती गई। आज इस पर करीब 8,200 करोड़ रुपये का कर्ज है और लगातार चार तिमाहियों में उसे घाटा हुआ है। नतीजतन रोजाना लगभग छह सौ उड़ान भरने वाली यह विमानन कंपनी अब करीब सवा सौ उड़ानों तक सीमित हो गई है, इसके 17,000 कर्मचारियों के सामने अस्तित्व का संकट है और वेतन न मिलने के कारण इसके पायलट दूसरी कंपनियों में जाने की तैयारी कर रहे हैं। ज्यादा चिंतनीय यह है कि सिर्फ जेट नहीं, दूसरी विमानन कंपनियों का भी हाल बदतर है, और सीटों की संख्या में आई जबर्दस्त कमी से सस्ती हवाई यात्रा की संभावना पर आघात लगा है। एयर इंडिया का हाल पहले से ही खराब है। इंडिगो भी पायलट की कमी से जूझ रही है और इस महीने तक इसने रोजाना पचास उड़ानें स्थगित कर रखी हैं। नतीजतन हवाई यात्रा चालीस से पचास फीसदी महंगी हो गई है। ऐसे में, जेट एयरवेज समेत पूरे विमानन क्षेत्र को पटरी पर लाने के लिए गंभीर प्रयास की जरूरत है।

चुनावी मौसम में राजनेताओं की सुरक्षा

आतंकवाद के बढ़ते खतरों के बीच अति विशिष्ट व्यक्तियों की अचूक सुरक्षा चुनौतीपूर्ण है, तिस पर चुनावी मौसम में प्रधानमंत्री और दूसरे राजनेताओं की सुरक्षा तो और भी कठिन है।

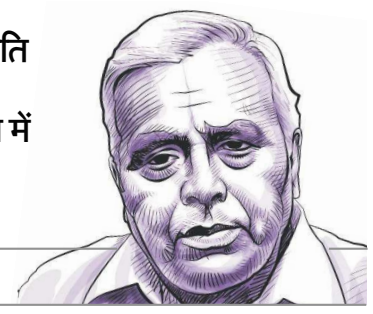

आर राजगोपालन, वरिष्ठ पत्रकार

जैसे ही लोकसभा चुनाव की घोषणा हुई, प्रधानमंत्री की सुरक्षा बढ़ा दी गई। विशेष सुरक्षा दल (एसपीजी) ने पुलिस महानिदेशक को एक गोपनीय पत्र के जरिये 'क्या करें' और 'क्या न करें' से संबंधित दिशानिर्देश जारी किए हैं। भारी खतरे के कारण एसपीजी ने अपनी सुरक्षा ड्रिल दोगुनी कर दी है। दिलचस्प बात यह है कि एसपीजी सुरक्षा पाने वाले तीन राजनेता 2019 का लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। चुनाव के दौरान इन राजनेताओं की सुरक्षा एसपीजी के लिए एक बड़ी चुनौती है। ये तीन राजनेता हैं-प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, सोनिया गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी। कांग्रेस ने अगर मनमोहन सिंह को टिकट दिया, तो चुनाव में एसपीजी सुरक्षा प्राप्त नेताओं की संख्या चार हो सकती है। 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान अचूक सुरक्षा पाने वाले देश के शीर्ष सात व्यक्ति हैं-नरेंद्र मोदी, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा, संघ प्रमुख मोहन भागवत, फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला।

चुनाव के दौरान न केवल आम नागरिकों को, बल्कि देश के अति महत्वपूर्ण नेताओं को सुरक्षा प्रदान करना भी केंद्र सरकार की जवाबदेही है। देश ने पद पर रहते हुए दो प्रधानमंत्रियों-इंदिरा गांधी और राजीव गांधी, को खोया है। उसके बाद से केंद्र सरकार का मंत्रिमंडीय सचिवालय और केंद्रीय गृह मंत्रालय किसी भी पदासीन प्रधानमंत्री की सुरक्षा में कोई कोताही नहीं बरतना चाहता।

लोकसभा चुनाव तो छोड़िए, हाल ही में न्यूजीलैंड में जो हुआ है, उसे ध्यान में रखते हुए हमारी सुरक्षा एजेंसी ने प्रधानमंत्री की सुरक्षा दोगुनी कर दी है। नरेंद्र मोदी दुनिया के सातवें सबसे ज्यादा सुरक्षा प्राप्त व्यक्ति हैं। इस मामले में पहले नंबर पर अमेरिकी राष्ट्रपति हैं। नरेंद्र मोदी 35 अंतरराष्ट्रीय आतंकी समूहों और आठ पाकिस्तानी आतंकी संगठनों के निशाने पर हैं। एसपीजी की कुल ताकत 5,600 है, और एक समय में 350 एसपीजी ब्लैक कैट कमांडो तैनात रहते हैं। इन सभी को सेना, बीएसएफ, सीआरपीएफ और सीआईएसएफ से प्रतिनियुक्ति पर लाया जाता है। एसपीजी का प्रमुख काम पदासीन व पूर्व प्रधानमंत्रियों तथा उनके परिजनों की सुरक्षा है। वर्ष 1988 में एसपीजी का गठन संसद के एक अधिनियम के तहत किया गया था। इसके संस्थापक निदेशक भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी डॉ. एस सुब्रमणियन थे।

एसपीजी का प्रमुख काम हर मिनट प्रधानमंत्री की हर गतिविधि पर नजर रखना है। एसपीजी आतंकी हमलों, प्राकृतिक आपदाओं, राजनीतिक दुश्मनों, दुश्मन देश के राजनीतिक व आतंकी समूहों यानी सभी तरह के खतरों से प्रधानमंत्री की रक्षा करती है। राज्यों में रैलियों के दौरान प्रधानमंत्री की सुरक्षा चार स्तरों पर होती है। एसपीजी प्रधानमंत्री के आंतरिक स्तर के घेरे की सुरक्षा करती है। उसके बाद दूसरे स्तर की सुरक्षा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल करता है। उसके बाद तृतीय स्तर की सुरक्षा की जिम्मेदारी खुफिया ब्यूरो के राज्यों की सहायक इकाइयों के जवान करते हैं और चौथे स्तर की सुरक्षा की जिम्मेदारी राज्य पुलिस की होती है। मान लीजिए, प्रधानमंत्री तमिलनाडु के दौरे पर जाते हैं, तो तमिलनाडु पुलिस प्रधानमंत्री के चौथे स्तर की जिम्मेदारी संभालेगी। प्रधानमंत्री की हर यात्रा के लिए पचास से साठ कारों की योजना बनाई जाती है, जिसका समन्वय एसपीजी द्वारा किया जाता है। एसपीजी के पास विशेष जैमर होता है, जो किसी भी विस्फोटक उपकरण के रिमोट कंट्रोल को बेअसर करता है। जैमर की निगरानी और देखभाल एसपीजी द्वारा की जाती है। प्रधानमंत्री जहां भी यात्रा पर जाएंगे, वायुसेना के विमान नई दिल्ली से बुलेट प्रूफ कार उन स्थानों पर ले जाएंगे।

प्रधानमंत्री मोदी की कार को एसपीजी के पांच जवान घेरे रहते हैं। उन्हें सुरक्षा एजेंसी से सख्त निर्देश है कि जब तक बाहर से सुरक्षा मंजूरी नहीं मिल जाती, प्रधानमंत्री अपनी कार का दरवाजा न खोलें। वे पांचों एसपीजी जवान बुलेट प्रूफ जैकेट पहने होते हैं। अगर उन्हें गोलीबारी या भीड़ का कोई खतरा होता है, तो ये जवान प्रधानमंत्री के लिए मानव दीवार बन जाते हैं। वे प्रधानमंत्री को चारों तरफ से घेर लेते हैं, ताकि उन्हें कोई छू भी न सके। एसपीजी के एक जवान के हाथ में काला हैंडबैग होता है। यह सामान रखने वाला कोई थैला नहीं, बल्कि इसमें इलेक्ट्रिक शील्ड होती है, जो मात्र तीन सेकंड में खुल जाएगी और प्रधानमंत्री को अपने घेरे में लेकर उनकी सुरक्षा करेगी। यह किसी भी रिमोट सेंसिंग से नियंत्रित हथियारों को बेअसर कर देगी। एसपीजी के जवान चारों तरफ देखते रहते हैं और उनकी घूमती आंखों को भीड़ या आतंकवादी न देख सकें, इसलिए वे हमेशा अपनी आंखों पर काला चश्मा लगाए रखते हैं। काले चश्मे फैशन के लिए नहीं, उनकी आंखों की सुरक्षा के लिए होते हैं।

बढ़ते वैश्विक आतंकवाद के कारण नरेंद्र मोदी की रक्षा सुरक्षा एजेंसियों के लिए एक बड़ी चुनौती है। जिस तरह से आतंकवादी किसी भी व्यक्ति पर हमला करने के लिए नई तकनीक विकसित कर रहे हैं, हमारी सुरक्षा एजेंसियां भी विभिन्न प्रकार की तकनीकों और उपकरणों का विकास कर रही हैं, ताकि प्रधानमंत्री की सुरक्षा हो सके। दुनिया भर में सुरक्षा एजेंसियां बंदूकों, जैमरों और बख्तरबंद गाड़ियों जैसे कई सुरक्षा उपकरणों का इस्तेमाल करती हैं।

एसपीजी अधिनियम के अनुसार प्रधानमंत्री किसी निजी वाहन में यात्रा नहीं कर सकते, उन्हें एसपीजी द्वारा मान्य वाहनों में ही यात्रा करनी होगी, जो बुलेट प्रूफ होता है। प्रधानमंत्री की यात्रा से तीन दिन पहले ही एसपीजी उनके लिए भारतीय वायुसेना के विमान से संबंधित स्थान पर बुलेट प्रूफ कार का विशेष प्रबंध करती है।

एसपीजी अधिनियम के अनुसार राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की निजी सुरक्षा के लिए पुलिस महानिदेशक और पुलिस कमिश्नर सीधे उत्तरदायी होते हैं। यही कारण है कि एसपीजी हमेशा पुलिस महानिदेशक के साथ तालमेल बिठाती है। एसपीजी केवल प्रधानमंत्री की सुरक्षा करती है, जबकि राज्य पुलिस को प्रधानमंत्री को विरोधियों से भी बचाना होता है।

अंतर्ध्वनि

>> कृश्न चंदर

जब एक सिपाही मरता है, तो एक दुनिया मरती है

बचपन में एक बार मेरे पिता राजा बलदेव सिंह (एक रियासत के राजा) को देखने गए, जो बीमार थे। उनके साथ मैं भी गया। वहां मेरी मुलाकात दो राजकुमारों से हुई, उन्होंने मुझे अपने खिलौने दिखाए और मुझसे पूछा, 'डॉक्टर के बेटे! तुम्हारे पास क्या है दिखाने को?' मैंने झेंपकर कहा, 'कुछ नहीं है'। उन्होंने मेरी जेब टटोलकर उसमें से सफेद हत्थी वाला चाकू निकाल लिया। जब मैंने अपना चाकू मांगा, तो राजकुमारों ने नहीं दिया। मैंने उन्हें चांटा मार दिया। फिर वे दोनों मुझ पर पिल पड़े और खूब मारा। मैं रोने लगा, मेरे रोने पर पिताजी आए और सारा माजरा जानकर उन्होंने मुझे ही चांटा मारते हुए कहा, 'बदमाश! राजकुमार पर हाथ उठाता है।'

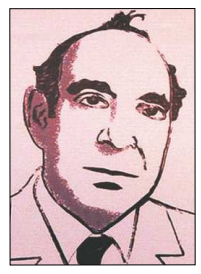

खैर, वह चाकू मुझे वापस नहीं मिला। यह तो मुझे बाद में मालूम हुआ कि लोग इसी तरह करते हैं। सफेद हत्थी वाला चाकू, कोई हसीन लड़की, ज़रखेज जमीन का टुकड़ा, सब इसी तरह हथिया लेते हैं। फिर वापस नहीं करते। इसी तरह तो जागीरदारी चलती है। मगर अच्छा नहीं किया उन लोगों ने। दो आने के चाकू के लिए उन्होंने मुझे अपना दुश्मन बना लिया। वह सफेद चाकू आज तक मेरे दिल में खुबा हुआ है। इसी तरह आज तक मैंने जो कुछ लिखा है, वह उसी सफेद चाकू को वापस लेने के लिए लिखा है। हालांकि मैंने भी अपनी जिंदगी में अनेक बार झूठी कसमें खाई हैं, अपने आप को और दूसरों को धोखे दिए हैं, खुशामदें की हैं, लड़ा हूं। मैं अपनी प्रशंसा से खुश हुआ हूं, दूसरों की प्रशंसा से जला हूं। लड़ाई से कोई संवेदनशील अदीब खुश नहीं होता...जब एक सिपाही मरता है, तो एक दुनिया मरती है। एक ख्याल मरता है, एक उम्मीद मरती है और एक किताब मरती है। साइंस की नई ईजाद, सच्चाई, सौंदर्य सब मर जाता है और दुनिया पहले से अधिक वीरान, गरीब और कमजोर हो जाती है।

-मशहूर साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> अनिल शेट्टी

बंगलूरू में ऑटो वालों की छवि बदली

मैं कर्नाटक में उडुपी जिले के एक छोटे-से गांव कुंडापुरा का रहने वाला हूं। स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद करीब बारह-तेरह साल पहले मैं इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने बंगलूरू आया था। बंगलूरू में रहते हुए यहां के ऑटो वाले के स्वभाव ने मुझे हैरान किया। महानगर में मैं पहली बार रहने आया था और मैंने देखा कि कॉलेज जाते या वहां से लौटने के क्रम में ऑटो वाले कई बार इशारा करने के बावजूद नहीं रुकते थे। मेरे दोस्तों की भी यही शिकायत थी। बंगलूरू के ऑटो वालों के बारे में यह धारण बन गई थी कि वे बेहद बदतमीज और संवेदनहीन हैं। हालांकि मैं ऐसा नहीं मानता था। बल्कि पढ़ाई के दौरान कई ऑटो वाले से मेरी दोस्ती हो गई थी और मुझे समझ में आया था कि यह काम करते हुए परिवार का पालन-पोषण करने में वे उतने ही परेशान हैं, जितने कि हम अपने भविष्य के बारे में सोचकर होते थे। ज्यादातर लोग किराये का ऑटो चलाते थे और उन्हें रोज दो सौ रुपये ऑटो मालिक को देने पड़ते थे। ईंधन की बढ़ी हुई कीमत, सड़कों पर दिनोंदिन बढ़ते ट्रैफिक और साहूकार से लिए गए कर्ज का ब्याज उन्हें परेशान करता था। न तो निश्चित आय की गारंटी थी और न ही ग्राहकों से पेश आने का कोई सलीका उन्होंने सीखा था। तिस पर ट्रैफिक पुलिस का शोषण तो था ही।

आज मेरे इस संगठन से 1,500 ऑटो वाले जुड़ चुके हैं, जो रोज बीस हजार से अधिक लोगों को यात्रा कराते हैं।

मेरी पढ़ाई पूरी भी नहीं हुई थी कि मैं पहले सामाजिक उद्यमिता से जुड़ गया, फिर इन्वेस्टमेंट बैंकर बन गया। लेकिन मेरी इच्छा थी कि मैं ऑटो वालों की छवि सुधारने की दिशा में कुछ करूं। चूंकि महात्मा गांधी को मैं अपना आदर्श मानता हूं, इसलिए दो अक्तूबर, 2013 को मैंने बंगलूरू में पीस ऑटो मूवमेंट की शुरुआत की। यह दरअसल एक संगठन था, जिससे शुरुआत में सात ही ऑटो वाले जुड़े। इससे जुड़ने की शर्त यह थी कि कोई ऑटोवाला किसी सवारी को ले जाने से मना नहीं करेगा, अपनी सवारी का हंसकर स्वागत करेगा, सवारी को ठगेगा नहीं, मीटर के अनुसार ही किराया लेगा और ऑटो में सवारी की कोई चीज छूट गई हो, तो उसे वापस करेगा। इसके लिए भी हमने एक व्यवस्था बनाई है। पीस ऑटो मूवमेंट का अपना फोन नंबर है। अगर किसी सवारी का कोई सामान, चाहे वह पैसा ही क्यों न हो, ऑटो में छूट जाता है, तो वह हमारी संस्था से संपर्क कर उसे वापस ले सकता है। हमारा मानना है कि समाज में एक ऑटो वाले की भी उतनी ही जिम्मेदारी है, जितनी कि एक पुलिस अधिकारी की। यानी देर रात सड़क पर कोई महिला हो, तो उसकी सुरक्षा की जितनी जिम्मेदारी पुलिस की है, उतनी ही एक ऑटो वाले की भी।

आज मेरे इस संगठन से 1,500 ऑटो वाले जुड़ चुके हैं, जो रोज बीस हजार से अधिक लोगों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं। ऑटो वालों को महीने में एक निश्चित राशि, जो मामूली ही है, संगठन को देनी पड़ती है। संगठन के कल्याण कोष में आज 25 लाख रुपये जमा हैं। यह कोष बनाया ही इसलिए गया है, ताकि जरूरत के समय सदस्य यहां से पैसे ले सकें। अगर संस्था से जुड़ा कोई ऑटो वाला घायल हो जाता है, काम करने की स्थिति में नहीं होता, तो संस्था की ओर से उसके ऑटो की मरम्मत के अलावा उसके घर में राशन पहुंचाने की भी व्यवस्था की जाती है। हम बंगलूरू के हर ऑटो वाले को अपनी संस्था से नहीं जोड़ते। आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों को हमने अपनी संस्था से दूर रखा है। हम गहन जांच के बाद ही किसी ऑटो वाले को अपनी संस्था की सदस्यता देते हैं।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

स्वच्छता के मोर्चे पर

लगता है कि नरेंद्र मोदी के अपने ही साथी स्वच्छता अभियान की योजना को विफल करने में लगे हैं। वे समझ नहीं पा रहे कि यह योजना प्रधानमंत्री को कितनी प्रिय है। अगर वे समझे होते, तो अपने चुनाव क्षेत्रों में स्वच्छता के मामले में कोताही नहीं बरतते।

तवलीन सिंह

हम पत्रकारों के लिए चुनावों का मौसम भारत दर्शन पर निकलने का मौसम होता है। सो पिछले सप्ताह सुबह-सबेरे उठकर मैं सड़क के रास्ते मथुरा की तरफ निकल पड़ी। मैंने मथुरा लोकसभा क्षेत्र चुना, क्योंकि हेमा मालिनी यहां से सांसद हैं। होली भी थी, तो सोचा कि इस प्राचीन नगर की होली इतनी रंगीन है कि मेरे इस चुनावी दौरे में थोड़ा रंग भी आ जाएगा। लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मथुरा तक मैं पहुंची ही नहीं, क्योंकि रास्ते में जिन गांवों में चुनाव के बारे में पूछने के लिए रुकी, उनका हाल देखकर होली के सारे रंग फीके पड़ गए।

इस क्षेत्र को मैं जानती हूं। मैं जन्माष्टमी मनाने वृंदावन आ चुकी हूं और बहुत बार मथुरा भी आई हूं। लेकिन पिछले कई वर्षों से इस तरफ आना नहीं हुआ था, सो मुझे बिल्कुल जानकारी नहीं थी कि जहां कभी हरे-भरे खेत होते थे, वहां अब कचरे के ढेर और गंदी, बेहाल बस्तियां हैं। मुझे मालूम नहीं था कि जिन छोटे मंदिरों और मस्जिदों को देखकर दिल खुश हो जाता था, वे भी छिप गए हैं गंदी बस्तियों के भीतर। बेहाल, गंदी बस्तियों का सिलसिला शुरू हुआ हरियाणा के पलवल शहर से। इस शहर के बीच से नया हाइवे निकल रहा है, सो एक मलबे भरे नाले ने उसको जैसे दो हिस्सों में बांट दिया है। उसके आसपास जहां तक नजर जाती है, कूड़े के ढेर दिखते हैं। इन ढेरों के बीच दिखते हैं रेस्टोरेंट, जिम और दुकानें।

इस किस्म के दृश्य मथुरा जनपद के हर कस्बे में दिखे और हाइवे से उतर कर मैं जब गांवों में गई, तो ऐसा लगा कि मैं नर्क में पहुंच गई हूं। खेतों में फैले कूड़े का ढेर देखकर बहुत बुरा लगा, क्योंकि मुझे याद आया कि हेमा मालिनी जी रोज टेलीविजन पर 'केन्ट का शुद्ध पानी' का प्रचार करती हुई दिखती हैं। क्या अपने कभी अपने चुनाव क्षेत्र का पानी पिया है, हेमा जी? क्या आपने उन गांवों का कभी दौरा किया है, जहां आपके मतदाता बेहद बुरी हालत में जीवन व्यतीत करते हैं? क्या आपने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान के बारे में कभी सुना भी है?

मैं पहले भी कह चुकी हूं, लेकिन यह ऐसी बात है, जिसको बार-बार दोहराया जाए, तो भी काफी नहीं : नरेंद्र मोदी ने लाल किले से स्वच्छता की बात करके इस देश पर सबसे बड़ा उपकार किया है। महात्मा गांधी के बाद वह पहले नेता हैं, जिन्होंने देश की गंदगी और गंदी आदतों की तरफ ध्यान दिलाया है। स्वच्छ भारत मोदी के इस कार्यकाल का सबसे सफल कार्यक्रम रहा है। ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं कि खुले में शौच करने की बुरी आदत पूरे देश में लगभग बंद हो गई है, बल्कि इसलिए भी कि जहां बंद नहीं हुई है, वहां कम से कम इतना हुआ है कि इस आदत से गंदगी और बीमारियां फैलने के बारे में लोग अच्छी तरह समझ गए हैं।

लेकिन ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री मोदी के अपने ही साथी इस योजना को विफल करने में लगे हुए हैं। मोदी जी, आपके सांसद और विधायक नहीं समझ पाए हैं कि आपको यह योजना कितनी प्रिय है। वे समझे होते, तो कम से कम इतना तो कर दिखाते कि अपने चुनाव क्षेत्रों में नगरपालिकाओं और पंचायतों को सावधान करते कि स्वच्छता के मामले में जरा भी कोताही न बरतें।

शिवराज सिंह चौहान अगर इंदौर और भोपाल जैसे शहरों को साफ कर सकते हैं, तो पूरा देश भी साफ हो सकता है। सो उम्मीद है मोदी जी कि अगर आप दोबारा बनते हैं देश के प्रधानमंत्री, तो अपने सांसदों और विधायकों को स्वच्छता अभियान से जोड़ेंगे। भारत माता का बहुत बुरा हाल है।

खुली खिड़की

खुदकुशी में लिथुआनिया आगे

दुनिया में सबसे ज्यादा खुदकुशी लिथुआनिया के लोग करते हैं, जहां प्रति लाख लोगों पर आत्महत्या की दर 31.9 है, दूसरे स्थान पर रूस और तीसरे स्थान पर गुयाना है। भारत में प्रति लाख लोगों पर आत्महत्या की दर 16.3 है।

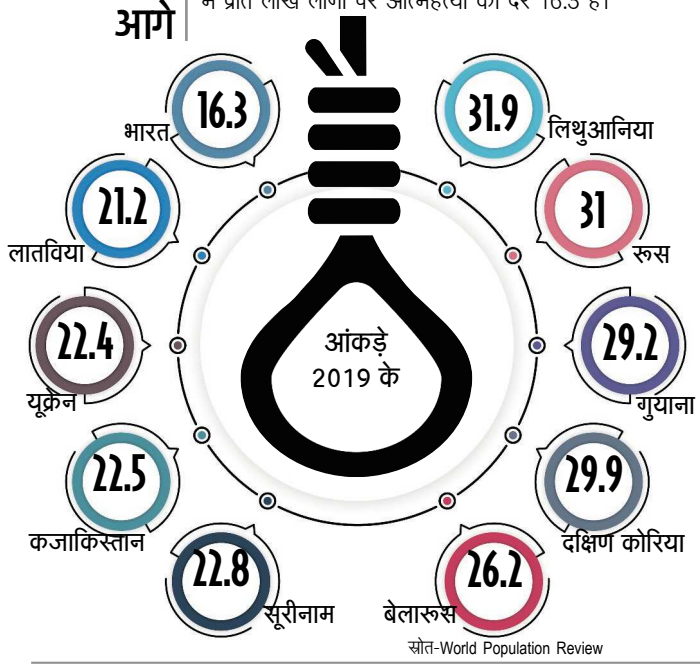

स्रोत-World Population Review

कर्ण की दानवीरता

सत्संग

एक बार भगवान कृष्ण भरी सभा में कर्ण की दानवीरता की प्रशंसा कर रहे थे। अर्जुन को कर्ण की प्रशंसा अच्छी नहीं लगी। श्रीकृष्ण यह बात समझ गए। कुछ दिनों बाद नगर में एक ब्राह्मण की पत्नी का निधन हो गया। ब्राह्मण अर्जुन के पास आकर कहने लगा, धनंजय! मेरी पत्नी मर गई है। उसकी आखिरी इच्छा थी कि उसका दाह संस्कार चंदन की लकड़ियों से हो। क्या आप मुझे चंदन की लकड़ियां दे सकते हैं? अर्जुन ने तत्काल कोषाध्यक्ष को पच्चीस मन चंदन की लकड़ियां लाने की आज्ञा दी। पर उस दिन न तो भंडार में और न ही बाजार में चंदन की लकड़ी थी।

अर्जुन के महल से निराश होकर वह ब्राह्मण कर्ण के पास पहुंचा। कर्ण के सामने भी वही मजबूरी थी। पर उन्होंने तुरंत अपने कोषाध्यक्ष को महल में लगे चंदन के खंभे निकाल कर ब्राह्मण को देने की आज्ञा दे दी। चंदन की लकड़ियां लेकर ब्राह्मण चला गया। शाम को अर्जुन श्रीकृष्ण के साथ टहलने निकले, तो देखा कि वही ब्राह्मण श्मशान में कीर्तन कर रहा है। अर्जुन ने ब्राह्मण से लकड़ी के बारे में पूछा, तो उसने बताया कि कर्ण ने अपने महल के खंभे निकाल कर मेरा संकट दूर किया। यह सुन श्रीकृष्ण अर्जुन से बोले, चंदन के खंभे तो तुम्हारे महल में भी थे, पर तुम्हें उनकी याद ही नहीं आई। यह सुन अर्जुन लज्जित हो गए और उन्हें समझ में आ गया कि कर्ण को लोग दानवीर कर्ण क्यों कहते हैं।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

राजीव, पिता और उम्मीद

यह एक युवा की कहानी है, जिसने अपने कर्मों से आदर्श स्थापित किया।

राजीव अपने पिता की इकलौती संतान था। उसके पिता बूढ़े हो चले थे, लेकिन राजीव अपनी हर खुशी अपने बूढ़े पिता के साथ बांटना चाहता था। उसने एक नई गाड़ी खरीदी थी, इसलिए वह चाहता था कि उसी गाड़ी पर बिठाकर वह अपने पिता को कहीं बाहर खाना खिलाने के लिए ले चले। उसके पिता को भी बाहर खाना पसंद था। एक दिन दोनों शहर के एक नामचीन होटल में खाना खाने पहुंचे। पूरा हॉल भरा हुआ था, कोई गायिका बहुत सुंदर गजल सुना रही थी। राजीव और उसके पिता अपनी जगह पर बैठ गए। ऑर्डर करने के कुछ ही देर बाद खाना आ गया। राजीव के पिता के लिए वह शाम बहुत खुशनुमा थी। लेकिन खुशी के मारे खाते वक्त उनके हाथ कांपने लगे और सारा खाना कपड़े पर गिरने लगा। उनके हाथ से चम्मच छूटकर झन्न की तेज आवाज करता हुआ नीचे गिर गया। वहां बैठे सभी लोग उनकी तरफ देखने लगे। कुछ लोग तो उनकी तरफ देखकर मुंह भी बनाने लगे। लेकिन राजीव ने पिता का मुंह पोछा और उन्हें पकड़कर बाथरूम ले गया। बाथरूम जाकर राजीव के पिता बोले, माफ करना बेटा, मेरी वजह से तुम्हें शर्मिंदगी झेलनी पड़ी। लेकिन राजीव ने कहा, कोई बात नहीं पापा। ऐसा कभी-कभी हो जाता है। राजीव के पिता को अपने बेटे पर बहुत गर्व हुआ। बाथरूम से लौटते वक्त राजीव के पिता मुस्करा रहे थे। राजीव ने बिल का भुगतान किया और वे बाहर की तरफ जाने लगे। तभी पीछे बैठे एक व्यक्ति ने कहा, सुनिए। आप कुछ छोड़े जा रहे हैं। राजीव ने पीछे देखा, अपनी जेबें टटोलीं, अपने पिता से इशारों में पूछा, और फिर बोला, नहीं तो। हम कुछ भूल नहीं रहे। वह सज्जन बोला, आप यहां मौजूद हर पिता के लिए एक उम्मीद और हर बेटे के लिए एक सबक छोड़े जा रहे हैं।

मां-बाप की उम्मीद होते हैं बच्चे। हमें अपने बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए।